



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 316]

नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 20, 2010/अग्रहायण 29, 1932

No. 316]

NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 20, 2010/AGRAHAYANA 29, 1932

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

जाँच शुरुआत संबंधी

नई दिल्ली, 20 दिसम्बर, 2010

विषय : चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित “सभी प्रकार के पॉलिएस्टर अथवा ग्लास फाइबर (सभी चौड़ाइयों और लम्बाइयों सहित) से बने जियोग्रिड/जियोस्ट्रिप्स/जियोस्ट्रैप्स” के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जाँच की शुरुआत।

सं. 14/40/2010-डीजीएडी.—मै. टेक फैब इंडिया इंडस्ट्रीज लि. ने 1995 में यथा-संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा जाएगा) तथा सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण हेतु) नियमावली, 1995 (जिन्हें एतदपश्चात् नियम जाएगा है) के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन दायर किया है जिसमें चीन जन.गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सभी चौड़ाइयों और लम्बाइयों सहित सभी प्रकार के पॉलिएस्टर अथवा ग्लास फाइबर से बने जियोग्रिड/जियोस्ट्रिप्स/जियोस्ट्रैप्स (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जाँच शुरू किए जाने का अनुरोध किया गया है।

2. और यतः प्राधिकारी ने पाया है कि संबद्ध देश के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन, घरेलू उद्योग की “क्षति” तथा पाटन एवं “क्षति” के बीच कारणात्मक संबंध के पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य मौजूद हैं और वे एतद्वारा किसी कथित पाटन की उपस्थिति, मात्रा एवं प्रभाव का निर्धारण करने तथा पाटनरोधी शुल्क की राशि जिसे यदि लागू किया जाए तो वह घरेलू उद्योग की “क्षति” को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, की सिफारिश करने के लिए उपरोक्त पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 के अनुसार कथित पाटन एवं परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जाँच प्रारंभ करते हैं।

घरेलू उद्योग तथा उसका “मत”

3. यह आवेदन मै. टेक फैब इंडिया इंडस्ट्रीज लि. द्वारा घरेलू उद्योग की ओर से दायर किया गया है। समान वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन में अधिकांश हिस्सा मै. टेक फैब इंडिया इंडस्ट्रीज लि. का है और वह समान वस्तु के भारतीय उत्पादन के 50% से अधिक है। इस प्रकार, यह आवेदन पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और 5(3) की शर्तों को पूरा करता है। इसके अतिरिक्त पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर मै. टेक फैब इंडिया इंडस्ट्रीज लि. को “घरेलू उद्योग” माने जाने का प्रस्ताव है।

विचाराधीन उत्पाद

4. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद सभी प्रकार के पॉलिएस्टर अथवा ग्लास फाइबर (सभी चौड़ाइयों और लम्बाइयों सहित) से बने जियोग्रिड/जियोस्ट्रिप्स/जियोस्ट्रैप्स है।

जियोग्रिड छिद्र (जिन्हें रन्ध्र कहा जाता है) युक्त सामान्य ग्रिड जैसे पैटर्न में संकुचित संघटकों वाली एक कृत्रिम सामग्री है। जियोग्रिड का प्रमुख कार्य प्रबलन है। बैंड्स/रिब्स और रन्ध्रों के आकार की सुदृढ़ता सिविल इंजीनियरी की संरचनाओं को स्थिरता प्रदान करती है। विशिष्ट प्रयोजनों/अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री के इस्तेमाल से और विभिन्न प्रकार की सुदृढ़ता (बैंड्स/रिब्स की) और छिद्र आकार वाले जियोग्रिड्स का विनिर्माण किया जाता है। ये जियोग्रिड्स पॉलिएस्टर, पॉलीप्रोपीलीन, ग्लास फाइबर आदि से बनाए जा सकते हैं। वर्तमान याचिका में केवल पॉलिएस्टर और ग्लास फाइबर से बने जियोग्रिड्स शामिल हैं। पॉलीप्रोपीलीन जियोग्रिड्स विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर हैं। ये एक-अक्षीय या द्वि-अक्षीय हो सकते हैं। एक अक्षीय पॉलिएस्टर जियोग्रिड्स मुख्यतः एक दिशा में अर्थात् मशीन डायरेक्शन में सुदृढ़ता प्रदान करता है जबकि द्विअक्षीय पॉलिएस्टर जियोग्रिड दोनों दिशाओं में अर्थात् मशीन डायरेक्शन और क्रॉस डायरेक्शन में सुदृढ़ता प्रदान करता है। फाइबर ग्लास जियोग्रिड बिटुमिन/एसबीआर/लेटेक्स से मढ़े ग्लास फाइबर स्ट्रैण्ड्स से बने होते हैं। बिटुमिन/एसबीआर/लेटेक्स की परत कठोरता प्रदान करती है और फाइबर ग्लास जियोग्रिड को अवांछित रसायनों/विकिरणों से सुरक्षा प्रदान करती है और टूट-फूट से बचाती है। पॉलिएस्टर जियोग्रिड के मामले में यह प्रयोजन पॉलिमेरिक परत चढ़ाकर पूरा किया जाता है।

नॉन-वोवन फ़ैब्रिक से जुड़े जियोग्रिड नॉन-वोवन जियोग्रिड कम्पोजिट कहलाते हैं और वे विचाराधीन उत्पाद के दायरे में शामिल हैं।

आवेदक ने यह प्रस्ताव किया है कि विभिन्न उत्पाद प्रकारों का वर्गीकरण, यार्न (पॉलिएस्टर अथवा ग्लास) के प्रकार, ओरिएण्टेशन (एक-अक्षीय अथवा द्विअक्षीय), क्रॉस डायरेक्शन सुदृढ़ता (एक-अक्षीय जियोग्रिड के मामले में) और अंतिम तन्यता के आधार पर किया जा सकता है। प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ इन उत्पाद मानदण्डों पर विचार किया है।

समान वस्तु

5. आवेदक ने दावा किया है कि भारत में पाटन की जा रही संबद्ध वस्तुएँ घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के समान हैं। पाटित आयातों और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुओं के तकनीकी विनिर्देशनों, गुणवत्ता, प्रकार्यों अथवा अंतिम उपयोग में कोई अंतर नहीं है। ये दोनों तकनीकी एवं

वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और इसलिए पाटनरोधी नियमावली के तहत इन्हें “ समान वस्तु ” माना जाना चाहिए ।

अतः वर्तमान जाँच के प्रयोजनार्थ भारत में आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं को संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु के “ समान वस्तु ” माना जा रहा है ।

संबद्ध देश

6. वर्तमान जाँच में शामिल देश/भूभाग चीन जनवादी गणराज्य (जिसे एतदपश्चात् चीन जन. गण. कहा गया है) है ।

सामान्य मूल्य

7. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि चीन जन. गण. को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना जाना चाहिए । आवेदक ने यह भी दावा किया है कि संगत सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध न होने के कारण किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा परिकलित मूल्य के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं किया जा सकता है । आवेदक ने यह दावा किया है कि चीन के उत्पादकों के लिए भारत को समुचित सहोदर देश माना जा सकता है । जाँच शुरूआत के प्रयोजनार्थ चीन जन. गण. के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण की परिकलित पद्धति का सहारा लेकर सामान्य मूल्य के दावों को नियंत्रित किया गया है । विभिन्न प्रकार के जियोग्रिड्स के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है ।

निर्यात कीमत

8. आवेदक ने आईबीआईएस से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निर्यात कीमतों का दावा किया है । कारखाना द्वार निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए समुद्र भाड़ा, समुद्री बीमा, अंतर्देशीय भाड़ा तथा पत्तन व्यय के आधार पर कीमत समायोजन की अनुमति दी गयी है । विभिन्न प्रकार के जियोग्रिड्स के लिए अलग-अलग निर्यात कीमत निर्धारित की गयी है ।

पाटन मार्जिन

9. सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत के आधार पर आवेदक ने उत्पाद के प्रत्येक स्वरूप के लिए अलग-अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है । संबद्ध आयात भार को ध्यान में रखते हुए भारित औसत सामान्य मूल्य निर्धारित किया गया है । यह पाया गया है कि संबद्ध देश में संबद्ध वस्तुओं का सामान्य मूल्य निवल निर्यात कीमतों से बहुत अधिक है जिससे प्रथम दृष्ट्या यह संकेत मिलता है कि संबद्ध देश के मूल के अथवा से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं का पाटन किया जा रहा है जो पाटनरोधी जाँच की शुरूआत को उचित सिद्ध करता है ।

क्षति एवं कारणात्मक संबंध

10. आवेदक ने कथित पाटन के परिणामस्वरूप पाटित आयातों की संवर्धित मात्रा, कीमत कटौती, कीमत अवमूल्यन और लाभप्रदता, नियोजित पूँजी पर आय और नकद प्रवाह में कमी के रूप में हुई क्षति के संबंध में साक्ष्य प्रस्तुत किया है। पाटनरोधी जाँच की शुरूआत के औचित्य को सिद्ध करने के लिए संबद्ध देश से पाटित आयातों के परिणामस्वरूप आवेदक को हुई क्षति के पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं।

जांच की अवधि

11. आवेदक ने अप्रैल, 09 से 31 मार्च, 2010 (12 माह) को जाँच की अवधि माने जाने का प्रस्ताव किया है तथापि प्राधिकारी ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ 1 अप्रैल, 2009 से 30 जून, 2010 (15 माह) तक की अवधि को जाँच की अवधि माना है और प्रस्तावित अवधि में एक अतिरिक्त तिमाही को शामिल किया है। तथापि क्षति जांच अवधि में अप्रैल, 06-मार्च, 07, अप्रैल, 07-मार्च, 08, अप्रैल, 08-मार्च, 09 और जाँच की अवधि शामिल होगी।

सूचना प्रस्तुत करना

12. संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों, भारत में उनके दूतावास के जरिए उनकी सरकार, भारत में इस जांच से संबंधित समझे जाने वाले आयातकों और प्रयोक्ताओं तथा घरेलू उद्योग को निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से संगत सूचना प्रस्तुत करने के लिए अलग से लिखा जा रहा है। अन्य कोई हितबद्ध पक्षकार भी नीचे निर्धारित समय-सीमा के भीतर इस जाँच से संबंधित अपने अनुरोध प्रस्तुत कर सकता है :

निर्दिष्ट प्राधिकारी
पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
वाणिज्य विभाग
कमरा नं. 243, उद्योग भवन
नई दिल्ली-110107

समय सीमा

13. इस जांच से संबंधित कोई सूचना लिखित में भेजी जाए जो प्राधिकारी के पास उपर्युक्त पते पर इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से 40 दिन (चालीस दिन) के भीतर पहुँच जानी चाहिए। यदि निर्धारित अवधि के भीतर कोई सूचना प्राप्त नहीं होती अथवा अधूरी सूचना प्राप्त होती है, तो निर्दिष्ट प्राधिकारी, उपर्युक्त नियमावली के अनुसरण में, रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने परिणाम दर्ज कर सकते हैं।

अगोपनीय आधार पर सूचना प्रस्तुत करना

14. सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा पाटनरोधी नियमावली के नियम 7(1) के अनुसार प्रदत्त गोपनीय सूचना का गोपनीय और अगोपनीय सारांश (पाटनरोधी नियमावली के नियम 7(2) के अनुसार) सारांश प्रस्तुत किया जाना अपेक्षित है। अन्य हितबद्ध पक्षकारों को ऐसी सूचना की सार्थक समझ प्रदान करने के लिए गोपनीय सूचना के अगोपनीय रूपांतर अथवा अगोपनीय सारांश में पर्याप्त ब्यौरा शामिल किया जाना चाहिए। यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकार के विचार से ऐसी सूचना का सारांश तैयार करना संभव न हो तो उसका कारण बताते हुए एक विवरण प्रस्तुत करना अपेक्षित होगा।

उपर्युक्त पैरा में उल्लिखित तथ्यों के होते हुए भी यदि प्राधिकारी को यह विश्वास है कि गोपनीयता का अनुरोध उचित नहीं है अथवा सूचना प्रदाता सूचना को सार्वजनिक करने या उसे सामान्यीकृत अथवा सारांश रूप में प्रकट करने का प्राधिकार देने का अनिच्छुक है तो वह ऐसी सूचना की उपेक्षा कर सकते हैं।

सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण

15. नियम 6(7) के अनुसार कोई भी कोई भी हितबद्ध पक्षकार अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय रूपांतर वाली सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण कर सकता है।

असहयोग

16. यदि कोई हितबद्ध पक्षकार आवश्यक सूचना जुटाने से मना करता है या उचित समय के भीतर उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराता है या जांच में अत्यधिक बाधा डालता है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी अपने पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज कर सकते हैं तथा केन्द्रीय सरकार को यथोचित सिफारिशें कर सकते हैं।

पी. के. चौधरी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

INITIATION NOTIFICATION

New Delhi, the 20th December, 2010

Subject : Initiation of Anti-Dumping Investigation concerning imports of "Geogrid/Geostrips/Geostraps made of Polyester or Glass Fibre in all its forms" (including all widths and lengths) originating in or Exported from China PR.

No. 14/40/2010-DGAD.—M/s Techfab India Industries Ltd., has filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and Customs Tariff (Identification, Assessment

4826 GI/10-2

and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped articles and for Determination of injury) Rules, 1995 as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD Rules) for initiation of Anti-Dumping Duty investigation concerning imports of "Geogrid/Geostrips/ Geostraps made of Polyester or Glass Fiber in all its forms", including all widths and lengths (hereinafter also referred to as the subject goods) originating in or exported from China PR(hereinafter also referred to as the subject country).

2. AND WHEREAS, the Authority finds that sufficient evidence of dumping of the subject goods originating in or exported from the subject countries, 'injury' to the domestic industry and causal link between the alleged dumping and 'injury' exist to justify initiation of an anti-dumping investigation; the Authority hereby initiates an investigation into the alleged dumping, and consequent injury to the domestic industry in terms of the Rules 5 of the AD Rules, to determine the existence, degree and effect of any alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which if levied would be adequate to remove the 'injury' to the domestic industry.

Domestic Industry & 'Standing'

3. The Application has been filed by M/s Techfab India Industries Ltd. on behalf of the domestic industry. The production of M/s Techfab India Industries Ltd accounts for a major proportion of the total domestic production of the like article and is more than 50% of Indian production of the like article. The application thus satisfies the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the AD Rules. Further, M/s Techfab India Industries Ltd is proposed to be treated as "domestic industry" within the meaning of Rule 2(b) of the AD Rules.

Product under consideration

4. The product under consideration in the present application is "Geogrid/Geostrips/ Geostraps made of Polyester or Glass Fiber in all its forms" (including all widths and lengths).

Geogrid is a synthetic material having narrow elements in a regular, grid like pattern with voids (known as apertures). The major function of Geogrid is in the area of reinforcement. It is strength of the bands/ribs and size of apertures, which together lends stability to civil engineering structures. Geogrids are manufactured using

different material and in various strengths (of bands/ ribs) and aperture sizes to meet specific end application/requirement. These can be made of polyester, polypropylene, glass fibre material, etc. Present application is against Geogrids made of polyester and glass fibre materials only. Polypropylene Geogrids are beyond the scope of the product under consideration. Polyester Geogrids are made of polyester yarn coated with polymeric compound. These can either be uniaxial or biaxial. Uniaxial polyester Geogrids primarily exhibits strength in one direction, i.e., machine direction, while biaxial polyester Geogrids exhibit strength in both directions, i.e., machine direction and cross direction. Fiber Glass Geogrids are made of glass fiber strands, coated with bitumen/ SBR/ Latex. Bitumen/ SBR/ Latex coating provides rigidity, and protects fiber glass Geogrid from coming in contact with undesirable chemicals/ rays, thereby, preventing wear and tear of the same. In case of polyester Geogrids, this feature is achieved using polymeric coating.

Geogrids stuck to non-woven fabric are called non-woven Geogrid composites and are within the scope of product under consideration.

The applicant has proposed that different product types can be categorized on the basis of type of yarn (polyester or glass), orientation (uniaxial or biaxial), cross direction strength (in case of uniaxial geogrids) and ultimate tensile strength. The Authority has considered these product parameters for the purpose of the present investigations.

Like Articles

5. The applicant has claimed that the subject goods, which are being dumped into India, are identical to the goods produced by the domestic industry. There are no differences either in the technical specifications, quality, functions or end-uses of the dumped imports and the domestically produced subject goods. The two are technically and commercially substitutable and hence should be treated as 'like article' under the AD Rules.

Therefore, for the purpose of the present investigation, the subject goods produced by the applicant in India are being treated as 'Like Article' to the subject goods being imported from the subject country for the purpose of the present investigation.

Subject Countries

6. The countries/territory involved in the present investigation is the People's Republic of China (hereinafter also referred to as China PR).

Normal value

7. The Applicant has claimed that China PR should be treated as non market economy country. The applicant has further claimed that normal value could not be determined on the basis of price or constructed value in a market economy third country for the reason that the relevant information is not publicly available. Applicant has claimed that India can be considered as an appropriate surrogate country for the Chinese producers. For the purposes of initiation, the normal value claims have been moderated by resorting to the constructed method of determination of normal value for exporters/producers from China PR. Separate normal value has been determined for different type of Gegrids.

Export Price

8. The applicant has claimed export prices on the basis of data obtained from IBIS. Price adjustments have been allowed on account of Ocean Freight, Marine Insurance, Inland Freight and Port expenses to arrive at the net ex-factory export price. Separate export price has been determined for different type of Gegrids

Dumping Margin

9. Based on the normal value and export price, the applicant has determined dumping margin separately for each product type. Weighted average normal value has been determined considering associated import weights. It is found that the normal value of the subject goods in the subject country is significantly higher than the net export prices, prima-facie, indicating that the subject goods originating in or exported from the subject country are being dumped, to justify initiation of an antidumping investigation.

Injury and Causal Link

10. The applicant has furnished evidence regarding the 'injury' having taken place as a result of the alleged dumping in the form of increased volume of dumped imports, price undercutting, price suppression and decline in profitability, return on capital employed and cash flow for the domestic industries. There is sufficient evidence of the 'injury' being suffered by the applicant caused by dumped imports from subject countries to justify initiation of an antidumping investigation.

Period of Investigation

11. The applicant has proposed April'09 to 31st March 2010 (Twelve months) as the period of investigation. However, the Authority has considered **1st April 2009 to**

30th June 2010 (15 Months) as the POI for the purpose of present investigation by extending a quarter. The injury investigation period will however cover the periods April 2006-March 2007, April 2007-March 2008, April 2008-March 09 and the POI.

Submission of information

12. The known exporters in the subject country and their Government through their Embassy in India, importers and users in India known to be concerned and the domestic industry are being informed separately to enable them to file all information relevant in the form and manner prescribed. Any other interested party may also make its submissions relevant to the investigation within the time-limit set out below and write to:

**The Designated Authority,
Directorate General of Anti-Dumping & Allied Duties,
Ministry of Commerce & Industry,
Department of Commerce
Room No.243, Udyog Bhawan,
New Delhi -110107.**

Time limit

13. Any information relating to this investigation should be sent in writing so as to reach the Authority at the above address not later than 40 days from the date of publication of this notification. If no information is received within the prescribed time limit or the information received is incomplete, the Authority may record their findings on the basis of the 'facts available' on record in accordance with the AD Rules.

Submission of Information on Non-Confidential basis

14. All interested parties shall provide a confidential and non-confidential summary in terms of Rule 7 (2) of the AD Rules for the confidential information provided as per Rule 7 (1) of the AD Rules. The non-confidential version or non-confidential summary of the confidential information should be in sufficient detail to provide a meaningful understanding of the information to the other interested parties. If in the

4826 GI/10-3

opinion of the party providing information, such information is not susceptible to summary; a statement of reason thereof is required to be provided.

Notwithstanding anything contained in para above, if the Authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorise its disclosure in a generalised or summary form, it may disregard such information.

Inspection of Public File

15. In terms of rule 6(7) any interested party may inspect the public file containing non-confidential versions of the evidence submitted by other interested parties.

Non-cooperation

16. In case any interested party refuses access to and otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the Authority may record its findings on the basis of the facts available to it and make such recommendations to the Central Governments as deemed fit.

P. K. CHAUDHERY, Designated Authority